सेंट एण्ड्रयूज़ स्कॉट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल

9वीं एवेन्यू आई.पी.एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली - 92

सत्र: 2022 - 2023 – उत्तरपुस्तिका

कक्षा-7	विषय - हिन्दी	पाठ- 4 (नीति सप्तक)	उत्तरपुस्तिका

मौखिक प्रश्न /उत्तर

उत्तर क) ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें निरंतर अभ्यास करना चाहिए।

उत्तर ख) उत्तम विद्या की तुलना कवि ने कंचन (सोने) से की है।

उत्तर ग) विद्या प्राप्त करने के लिए परिश्रम आवश्यक है।

उत्तर घ) मूर्ख व्यक्ति निरंतर अभ्यास करके बुद्धिमान बन सकता है।

लिखित प्रश्न

उत्तर) १. ज्ञान
२. मधुर

२. क) हाँ
ख) नहीं
ग) नहीं
घ) हाँ

४. **किए गए दोहों के अर्थ लिखिए**:-

क) कवि वृंद कहते हैं कि हमें उतने ही पैर पसारने चाहिए, जितनी लंबी हमारी चादर हो अन्यथा हमारे पैर चादर से बाहर आ जाते हैं ।इसी प्रकार हमें अपने सामर्थ्य के अनुसार खर्च करना चाहिए, अन्यथा हमारा काम विफल हो सकता है।

ख) इस पंक्ति में कवि कहना चाहता है कि बिना मेहनत के कुछ भी नहीं पाया जा सकता हमें विद्या रूपी धन पाने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है क्योंकि जीवन में बिना किसी प्रयास के कोई चीज नहीं मिलती। जैसे पंखे को हिलाए बिना हमें हवा नहीं मिलती, वैसे ही विद्या भी परिश्रम से मिलती है।

५. **उत्तर लिखिए**:-

क) बुराई करने वालों को सुख की प्राप्ति इसलिए नहीं होती क्योंकि हम जो करते हैं ,उसी का परिणाम हमें प्राप्त होता है बड़ा करके हम सुख की आशा नहीं कर सकते।

ख) 'दूध में उफान 'के उदाहरण द्वारा कवि यह सिद्ध करना चाहता है कि जिस प्रकार दूध में उफान आने पर ठंडा पानी डालकर उसे शांत किया जा सकता है, उसी प्रकार से मीठे और मधुर वचन बोलकर बड़े-बड़े बोल बोलने वालों का अभिमान शांत किया जा सकता है।

ग) 'सरस्वती के भंडार 'की यह विशेषता कवि ने बताई है कि इस भंडार अर्थात ज्ञान को जितना खर्च करो, यह उतना ही

बढ़ता है और यदि ज्ञान खर्च न किया जाए, तो यह निरंतर घटता रहता है।

घ) किस प्रकार सोना का पवित्र स्थान पर पड़ा हो, फिर भी उसे कोई नहीं छोड़ता, ले लेता है। उसी प्रकार से उत्तम विद्या कहीं से भी ग्रहण कर लेनी चाहिए चाहे वह कितनी भी अधर्म व्यक्ति के पास ही क्यों न हो।

ड)' रसरी आवत जात तै सिल पर परत निसान' द्वारा कवि कहना चाहता है कि जिस प्रकार रस्सी के बार बार आने जाने के कारण पत्थर पर भी निशान पड़ जाते हैं उसी प्रकार मूर्ख -से- मूर्ख व्यक्ति भी निरंतर अभ्यास से बुद्धिमान हो जाता है।

६. **उत्तर विस्तार से अभ्यास पुस्तिका में लिखिए**:-

क) सरस्वती के भंडार की यह बात अपूर्व है कि उसे जितना खर्च करो वह उतना बढ़ता है और जितना उसे बचाओगे वह उतना ही घटता जाता है इसलिए इस बात को अपूर्व कहा गया है जिसका तात्पर्य है 'अनोखी'। यह बहुत ही अनोखी बात है कि विद्या खर्च करने पर बढ़ती है और बचाने पर घटती जाती है।

ख) कवि वृंद कहते हैं कि जिस प्रकार आक का जहरीला पौधा लगाकर आम जैसे मीठे फल की प्राप्ति नहीं हो सकती ,उसी प्रकार बुराई करने पर सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। क्योंकि, हम जैसा करते हैं वैसा ही फल हमें प्राप्त होता है।

ग) हमें अपने सामर्थ्य के अनुसार खर्च करना चाहिए क्योंकि अपने सामर्थ्य से बढ़कर खर्च करना उसी प्रकार है, जैसे अपनी चादर से बाहर पैर पसारना। हमें सदैव अपने सामर्थ्य के अनुसार ही कोई काम करना चाहिए। क्योंकि सामर्थ्य का आकलन किए बिना किए गए कार्य में सदैव पछताना ही पड़ता है। अतः खर्च करने से पहले अपने सामर्थ्य का आकलन करना और उसके अनुसार खर्च करना बहुत जरूरी है।

सोचो और बताओ

नैतिक मूल्य ऐसे मूल्य होते हैं जो हमें श्रेष्ठ जीवन जीने की राह दिखाते हैं यह हमें अच्छे बुरे, सत्य- असत्य ,उचित -अनुचित की पहचान करवाते हैं' नीति सप्तक' के दोहे नैतिक मूल्यों से भरपूर है ये दोहे उदाहरणों द्वारा

हमें नीति संबंधी बातें समझा कर नैतिक मूल्यों के विकास में सहायता करते हैं।

भाषा बोध

१. अधर्म ,अछूत ,अज्ञान, असफल, अकाट्य, अकथनीय , अज्ञात।

२. रस्सी, शिला, निशान, यद्यपि, अपवित्र ,शीत।

३. रजत, वनीता, पाहुल, अनिल।

४. अभ्यास , जड़मति, अपूरब, उद्यम।

५. साधारण, फल
पत्ता, चिट्ठी
आने वाला दिन, मशीन
पानी, जलना